मोहयाल इतिहास – विस्तार से

आप ने ऊपर "मोहयाल इतिहास प्रवेशिका" में अपने इतिहास का एक संक्षिप्त रूपांतर पढ़ा. आप की रूचि इस से अधिक विस्तार में मोहयाल इतिहास पढ़ने की हों तो निम्न लिखित विवरण पढ़ते चलें. इस की विषय सूची इस प्रकार है :

भाग - 1 : शासन और सम्प्रभुता (632-1026 ई)

1. मोहयाल गोत्र और उनका महत्व
2. मोहयाल जातियों और बिरादरी का गठन
3. वैद और दत्त जातियों में सगोत्र विवाह
4. मोहयालों की उपाधियाँ
5. अफ़ग़ानिस्तान में हिन्दू /मोहयाल राज
6. सिंध पर मोहयाल छिब्बर जाति का राज
7. अफ़ग़ानिस्तान में मोहयाल दत्त जाति का राज
8. पंजाब में मोहयाल वैद जाति का राज

भाग - 2 : प्रतिरोध और शहादत (1043 - 1750 ई)

9. मुस्लिम शासन का मोहयाल प्रतिरोध
10. धर्म के लिए साहस पूर्ण बलिदान
11. आख़री मोहयाल शासक और धर्म के लिए शहीद
12. ममदोट और पिंड दाड़न खान के मोहन
13. जंगनामा मोहनां

1. मोहयाल गोत्र और उनका महत्व

गोत्र क्या होता है? मोहयालों के गोत्र क्या हैं? इतनी लंबी अवधि में सब ने अपने मूल-पूर्वजों (गोत्र-ऋषियों) के नाम कैसे याद रखे जबकि आजकल बहुत लोगों को अपने परदादा का नाम भी याद नहीं होगा? इस प्रकार के कई प्रश्न आपके मन में आते होंगे. स्थानाभाव से यहां हम इन रोचक और ज्ञानवर्धक विषयों की संक्षिप्त रूप से ही व्याख्या कर सकेंगे. इनको ध्यान से समझने का प्रयास करें. एक बार पुनः पढ़ें.

मोटे तौर पर गोत्र आपके उस आदि-पूर्वज का नाम है जिसकी आप सन्तान हैं. हिंदु अपने पैतृक वंश में विवाह नहीं करते. इसका अर्थ यह हुआ कि पिछली कई शताब्दियों और सहस्राब्दियों में उनको अपने सगोत्र कबीलों (पैतृक परिवार के सगे सम्बन्धियों) की, किसी प्रकार, पूरी पहचान थी – ताकि उन से वैवाहिक सम्बन्ध न हों. हर व्यक्ति की इस प्रकार की पहचान के लिए भारत में एक अद्‌वितीय प्रथा थी जिसका हम वर्णन करेंगे. ऐसे प्रयोजन पहले ब्राह्मण अपनाते थे और धीरे धीरे यही प्रथा समाज के सभी अंगों में प्रचलित हो जाती थी.

आजकल हर व्यक्ति की पहचान उसके नाम से जुड़े प्रत्यय (suffix) अर्थात "जाति" से होती है. मोहन लाल **कपूर**, स्वप्न **चटर्जी**, चन्ना **रेडी** – आपको हर एक की व्यक्तिगत भूमिका की बहुत सी जानकारी उसकी "जाति" से मिल जाती है. इसी प्रकार वैदिक काल में पहचान के लिए हर एक ब्राह्मण के नाम के साथ चार चिह्नात्मक शब्द जुड़े होते थे. यह थे **प्रवर**, **गोत्र**, **वेद** और (वेद) **शाखा**.

प्रवर ऋषि आपका वह आदि-पूर्वज था जिसने अग्नि की स्तुति में मन्त्रों की रचना की और यह मन्त्र ऋगवेद में सम्मिलित किये गए. साधारणत: वह ऋषि ही आपका गोत्रकार भी था. परन्तु आगे चलकर इस वंश का कोई विशिष्ट व्यक्ति अपने नाम से नया गोत्र भी आरम्भ कर सकता था. उसका मन्त्रकृत होना आवश्यक नहीं था. (तब तक वेद व्यास द्‌वारा वेदों का संकलन भी हो चुका होगा).

कश्यप ऋषि के गोत्रकारों की संख्या 127 थी – उनमें कार्तिकेय, वात्सयान आदि प्रसिद्ध हैं. इसी प्रकार वैशम्पायन और मार्कण्डेय आदि भृगुकुल के गोत्र हैं. ("हमारे पूर्वज", श्रीमती डा० लज्जादेवी मोहन, पृष्ट 56, 58, 78). वैशम्पायन वंश के व्यक्ति का प्रवर भृगु और गोत्र वैशम्पायन होगा. भृगु से जो सीधी सन्तान हैं, जैसे हमारे "छिब्बर", उनका प्रवर और गोत्र भृगु है. मोहयालों की सब जातियां अपने प्रवर ऋषियों की सीधी सन्तान हैं इस कारण उनका प्रवर ऋषि ही उनका गोत्र ऋषि भी है.

क्योंकि वेद लिखे नहीं जाते थे और मौखिक रूप से पढ़े और पढाये जाते थे, हर ब्राह्मण वंश को किसी एक वेद की विशेष शाखा का दायित्व दिया गया था. यह भी उस वंश की, पीढी दर पीढी, पहचान चिह्नों का अंश था.

मोहयाल, जो सारस्वत ब्राह्मणों का एक भाग हैं, उनके लिए भी शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा निर्धारित थी. स्वर्गीय श्री वसिष्ट देव मोहन जी ने भी इस मत की पुष्टी की थी. ("मोहयाल टाइम्ज़ "नवम्बर 1993, पृष्ट 15). वेद और शाखा समान होने पर भी, हर मोहयाल जाति का प्रवर/गोत्र पृथक हैं. वैवाहिक सम्बन्धों के लिए, इन्ही लक्षणों में भेद के कारण, उनको सदैव अपने सगोत्र और "अन्य" कबीलों की पहचान थी.

एक शताब्दी पूर्व जिन बज़ुर्गों ने जनरल मोहयाल सभा स्थापित की थी उनको इस प्राचीन प्रथा की जानकारी थी. "जंग नामा मोहनां" जो मोहयाल मोहन जाति का इतिहास है उसके आरम्भ में (श्लोक

संख्या 18) और फिर अंत की ओर (श्लोक संख्या 150 में) ममदोट की मोहन जाति की इस प्रकार पहचान की गयी है - "कश्यप गोत्र, माधनी (माध्यन्दिनी) शाखा". [कुछ आगे यहां पूरा "जंगनामा मोहनां" उद्धृत है.]

भारत में बौद्ध धर्म की उत्कृष्टिता के दौरान बहुत सी वैदिक प्रथाएं ढीली पढ़ गयी थीं परन्तु ब्राह्मणों ने उनका त्याग नहीं किया. पहचान के लिए, नाम के साथ, चार के स्थान पर दो ही चिह्नात्मक शब्द जुड़ने लगे – व्यक्ति का गोत्र और शाखा. (मोहन : कश्यप गोत्र, माध्यन्दिनी शाखा). यह भी पर्याप्त थे क्योंकि गोत्र से प्रवर और शाखा से सम्बन्धित वेद का बोध हो जाता है.

प्रश्न : हमारी हज़ारों पीढ़ियों ने अपने आदि पूर्वज (गोत्र ऋषि) का नाम किस प्रकार याद रखा? वैदिक काल में हर गृहस्थ में यज्ञ का बड़ा प्रचलन था. यजमान अग्नि का आह्वान कर के अपने प्रवर का नाम लेता था, जिसने मन्त्रों द्वारा अग्नि की स्तुति की थी. इस प्रकार अपने आदि-पूर्वज (प्रवर/ गोत्र) कॊ प्रतिदिन याद करता था .

सब पुरानी परम्पराएं शिथिल पड़ जाने पर भी, हिन्दू विवाह अब भी वैदिक पद्धिति के अनुसार होते हैं. उसमें एक भाग है "गोत्राचार". इसमें विधि अनुसार वर, और फिर कन्या, अपना वेद, शाखा, प्रवर, गोत्र, अपना, परदादा, दादा, पिता के नाम घोषित करते हैं. आजकल पण्डित मण्डप में गोत्र तो अवश्य पूछते हैं परन्तु प्रवर के लिए, स्वयं ही "अमुक (such and such) प्रवर" बोल देते हैं. इस लिए अब भी लोग अपने गोत्र का नाम तो याद रखते हैं ताकि विवाह के धर्म अनुष्ठान में उनको झेंप न हो. (आप भी ध्यान रखिये !)

आपकी जानकारी के लिए हम प० श्रीवायुनन्दन मिश्र द्वारा लिखित और मास्टर खेलाडी लाल संकटा प्रसाद, वाराणसी, द्वारा प्रकाशित "विवाह पद्धिति" से (पृष्ट 50-51) "गोत्राचार" वाला अंश उद्धृत कर रहे हैं.

"**अथ गोत्राचार**

ऊं गणानान्त्वा गणपति ..... स्वस्ति श्रीमतः --- शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-माध्यन्दिनीय शाखा ध्येतू: कात्यायन सूत्रस्य ***अमुक गोत्रस्य, अमुक प्रवरस्य, अमुक शर्मणः प्रपौत्रः****, शुक्लयजुर्वेदा०* ***शर्मणः पौत्र****, शुक्लयजुर्वेदा०* ***शर्मणः पुत्रः****, प्रयतपाणि: शरणं प्रपद्ये, स्वस्ति संवादेषुभयोर्विद्धि: वर-कन्ययोर्मन्गलमासताँ वरश्चिरञ्जीवी भवतात, कन्या च सावित्री भूयात. इति वरपक्षे प्रथमशाखोच्चार:(१)*

उसका क्रम यह है – पहले वेद-मन्त्र को पढ़ें, बाद में मंगल श्लोक, फिर शाखोच्चार करें. इसी प्रकार कन्या पक्ष के भी ब्राह्मण शाखोच्चार करें."

* * *

मोहयालों के गोत्र

जाति	**प्रवर/गोत्र ऋषि का नाम**	**वंशज कहे जा सकते हैं**
बाली	पराशर	पाराशर
भीमवाल	कोशल	कौशल्य
छिब्बर	भृगु	भारगव
दत्त	भरद्वाज	भारद्वाज
लौ	वसिष्ठ	वासिष्ठ
मोहन	कश्यप	काश्यप
वैद	भरद्वाज	भारद्वाज/ धनवन्तरी

नोट : संस्कृत व्याकरण के अनुसार, पूर्वज के नाम का पहला "स्वर " वृद्धि लेकर और किसी प्रत्यय के साथ एक नया शब्द बना लेता है जो बेटे के नाम का परिचायक होता है. यह उस वंश के सभी व्यक्ति प्रयोग कर सकते हैं . उदाहरण – व्याकरण के इस नियम के अनुसार "छिब्बर" जाति का गोत्र (आदि-ऋषि के नाम से) "भृगु" है परन्तु छिब्बरों को भारगव कहा जा सकता है

**** ****